मौर्य वंश/साम्राज्य

असि०प्रो०डॉ० संदीप कुमार
इतिहास विभाग
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी
मो०-8051796740

मौर्य वंश की स्थापना :-

संस्थापक - चन्द्रगुप्त मौर्य

कालखंड - 323 ई० पू० से 298 ई० पू०

सहयोग तथा मार्गदर्शन - चाणक्य का

स्थापना - नन्द वंश के अवसान पर (धननन्द की पराजय)

चन्द्रगुप्त मौर्य की उत्पत्ति :- ① विष्णु पुराण के भाष्यकार श्रीधरस्वामी के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य नन्दराज की पत्नी मुरा से उत्पन्न हुआ था। वहीं पुराणों में नन्दों को शूद्र कहा गया है। इस प्रकार चन्द्रगुप्त मौर्य शूद्र थे।

② विशाखदत्त ने अपनी रचना मुद्राराक्षस में चन्द्रगुप्त मौर्य के लिये 'वृषल' शब्द का प्रयोग किया है, वहीं मनुस्मृति तथा महाभारत में वृषल शब्द का प्रयोग धर्मच्युत व्यक्ति के लिये किया गया है।

③ महावंश में चन्द्रगुप्त मौर्य को मोरिय नामक क्षत्रियवंश से उत्पन्न कहा गया है।

④ महापरिनिब्बान सुत्त में मौर्यों को पिप्पलिवन का शासक तथा क्षत्रिय वंश का कहा गया है।

⑤ हेमचन्द्र की रचना परिशिष्टपर्वन में चन्द्रगुप्त मौर्य को "मयूर पोषक ग्राम" के मुखिया के पुत्री का पुत्र कहा गया है।

नोट :- उपरोक्त कथनों से स्पष्ट है कि ब्राह्मण ग्रंथ जहाँ चन्द्रगुप्त मौर्य को शूद्र कहता है वहीं बौद्ध ग्रन्थ उसे क्षत्रिय कहता है जबकि जैन ग्रन्थ उसके शूद्र उत्पत्ति की ओर संकेत नहीं करता। इस प्रकार चन्द्रगुप्त मौर्य के वंश जाति को लेकर एक राय नहीं बन पाई है।

चन्द्रगुप्त मौर्य तथा चाणक्य की मुलाकात - पाटलीपुत्र के निकट, राजकीलम नामक खेल के दौरान

चन्द्रगुप्त की शिक्षा-दीक्षा - तक्षशीला में (चाणक्य के सहयोग से)

चाणक्य द्वारा चन्द्रगुप्त मौर्य को संरक्षण देने पीछे का उद्देश्य :—

(i) धुनानियों को पराजित कर विदेशी दासता से भारत को मुक्त करना

(ii) नन्द राजा धननंद से अपने अपना अपमान का बदला लेना।

उपरोक्त दोनों ही उद्देश्यों में चाणक्य सफल रहा।